बुँदेलखण्ड का इतिहास

पहला भाग

लेखक - दीवान प्रतिपाल सिंह

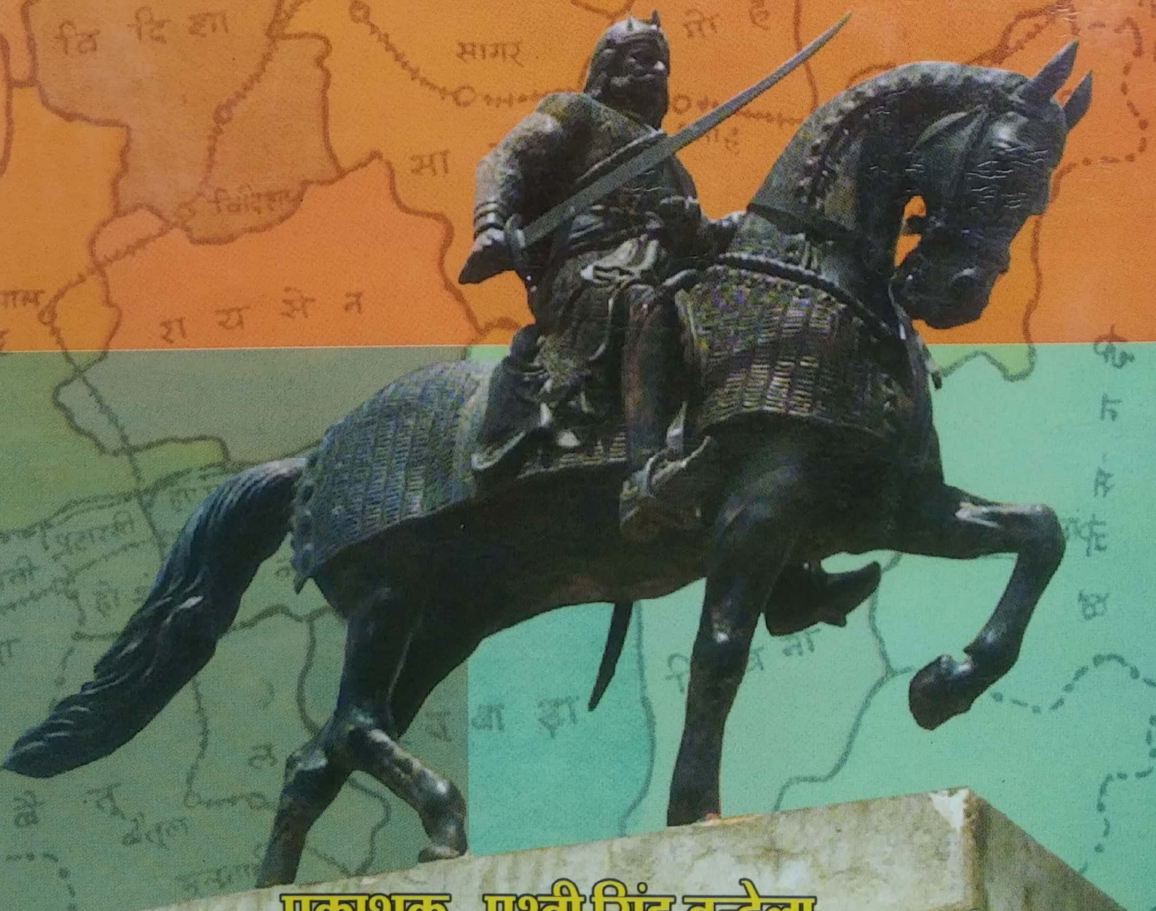

प्रकाशक - पृथ्वी सिंह बुन्देला
प्रतिपाल परिसर छतरपुर

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक परिचय

पृथ्वी सिंह बुन्देला

जन्म - ५ जनवरी १९२६ ई.

जन्म स्थान - छतरपुर

पिता - दीवान प्रतिपाल सिंह जू देव

माता - श्रीमती सीता जू

शिक्षा - बी.ए., होम्योपैथिक डिप्लोमा

सम्मान - म.प्र. शासन से उत्कृष्ट शिक्षण कार्य के लिए सम्मानित शिक्षक, शास. शिक्षा महाविद्यालय छतरपुर, पुरस्कृत चित्रकार, सम्मानित समाजसेवी।

पता - दीवान प्रतिपाल परिसर

पहरा हाउस, सागर रोड, छतरपुर (म.प्र.)

फोन - 07682-243574

मो. 9926182801

सम्पादक परिचय

डॉ. बहादुर सिंह परमार

जन्म - १६ जुलाई १९६३,

जन्म स्थान - रानीपुरा, (छतरपुर)

शिक्षा - एम.ए., पी-एच.डी.

रचनाएं - 1. अमरकांत का कथा साहित्य

2. बुन्देलखण्ड की छन्दबद्ध काव्य परंपरा

सम्पादन - 1. पत्रिका बुन्देली बसंत

2. बुन्देलखण्ड की साहित्यिक धरोहर

3. छतरपुर जिले की लोक कथाएं

4. बुन्देली व्यंजन आदि

सम्प्रति - शास. महाराजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय छतरपुर में सहा. प्राध्यापक हिन्दी

संपर्क - एमआईजी -7, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी छतरपुर (म.प्र.) मो. 9425474662

Scanned with OKEN Scanner

बुँदेलखंड का इतिहास

(प्रथम भाग)

लेखक

दीवान प्रतिपाल सिंह

मूल सम्पादक

प्रो. लाला भगवानदीन (दीन)

प्रकाशक

कुँवर पृथ्वी सिंह

द्वितीय संस्करण सम्पादक

डॉ. बहादुर सिंह परमार

Scanned with OKEN Scanner

© कुँ. पृथ्वी सिंह बुन्देला

द्वितीय प्रकाशन : सन् 2009
संख्या : 500 प्रतियाँ
कीमत : 300 रुपये
मुद्रक : जिला सहकारी संघ मुद्रणालय मर्या०
छतरपुर (म.प्र.)
प्राप्ति स्थल : डॉ. हरिसिंह घोष
घोषयाना मुहल्ला, संकट मोचन मार्ग
छतरपुर (म.प्र.)

जन्म पौष कृष्ण 8, संवत् 1938 चित्र–पौष 1984 वि.

श्री म०कु० श्री दीवान प्रतिपाल सिंह जू देव

(ग्रंथकर्ता)

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

खण्ड (अ) भूगोल

अध्याय पहला :		साधारण विवरण	१
	१.	वक्तव्य	१
	२.	स्थिति	३
	३.	सीमायें	३
	४.	क्षेत्रफल	५
	५.	देश का नाम	६
	६.	भूमि	१०
	७.	पहाड़	११
	८.	नदियाँ	१५
	९.	वन	३१
	१०.	जीव जंतु	३७
	११.	खानें	४०
	१२.	ऋतुएँ और जलवायु	४७
	१३.	स्वास्थ्य	४८
	१४.	पुरातत्व	५०
अध्याय दूसरा :		खेती	५१
	१.	साधारण वर्णन	५१
	२.	कृषकों का विश्वास	५२
	३.	उपज	५५
	४.	खेती के औजार	६१
	५.	मवेशी	६२
	६.	आबपाशी	६५
	७.	अकाल	७१

Scanned with OKEN Scanner

अध्याय तीसरा :	व्यापार	७४
१.	मुद्रायें	७४
२.	नाप-तौल	८५
३.	ऋण और सूद	८८
४.	शिल्प	९०
५.	व्यापार	९३
६.	बाजार	९४
७.	मेले	९६
८.	सवारी	१०३
९.	रेलवे	१०३
१०.	सड़कें	१०६
११.	पुल और घाट	१०८
१२.	धर्मशालायें, सराँय और बंगले	१०९
अध्याय चौथा :	**मनुष्य**	**१११**
१.	आबादी	१११
२.	नगर और गाँव	१२२
३.	भाषा-शिक्षा-साहित्य	१२६
४.	जातियाँ	१३४
५.	धर्म	१५३
६.	ग्रामीण देवता	१५७
७.	त्यौहार-उत्सव	१६०
८.	सामाजिक रीतियाँ	१६५
९.	प्रजा की स्थिति	१६८
१०.	कन्या वध	१६९
११.	अस्त्र-शस्त्र-त्राण आदि	१७१
अध्याय पाँचवाँ :	**शासन प्रणाली**	**१७३**
१.	शासन प्रबंध	१७३
२.	राज्य	१७६

Scanned with OKEN Scanner

३. जिले की मालगुजारियाँ १८२
४. सेना और पुलिस १८३
५. डाक-तार आदि १८५

अध्याय छठवाँ : बुँदेलखंड के कवि १८६

खण्ड (आ) प्राचीन इतिहास

अध्याय पहला : भूमिका २२८

अध्याय दूसरा : अनुमान काल २३७

अध्याय तीसरा : प्रस्तरकाल २४०

अध्याय चौथा : तिब्बती, बर्मी, कोल तथा नाग काल २४६

अध्याय पाँचवाँ : द्राविड़ २५८

❄❄❄❄❄

लेखक परिचय

दीवान प्रतिपाल सिंह

पिता - महाराज कुमार दीवान भानु सिंह जू देव
जन्म - पौष कृष्ण ८ बुध, संवत् १९३८ विक्रमी
अवसान - जनवरी १९३७ ई.
जन्म स्थान - ग्राम पहरा, छतरपुर राज्य
शिक्षा - सन् १९०१ ई. में आगरा से मैट्रिकुलेशन
रचनाएं - 1. आर्य देव कुल का इतिहास
2. बुन्देलखण्ड का इतिहास (बारह भागों में)
3. वीर बाला (उपन्यास)
4. खेल शतक
5. खेल पच्चीसी
संपादन - श्रृंगार कुंडली, विदुर , प्रजागर - कृष्णकवि, छत्रप्रकाश -लाल कवि, होली हजारा

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक दीवान प्रतिपाल सिंह जी ने बुंदेलखण्ड का विशालकाय इतिहास लिखकर अपने देश की सच्ची सेवा की है। यह इतिहास ही उनका यथार्थ जीवन है। दीवान जी जैसे कर्मठ तथा स्वदेश प्रेमी पुरूष के लिए पुण्यमय कार्य करना सर्वथा योग्य ही हुआ है। बुन्देलखण्ड के इतिहास का अभाव हमें बहुत दिनों से खटक रहा था। अवसर पाकर उस अभाव की पूर्ति एक अपने ही प्रिय शिष्य द्वारा हुई यह हमारे लिए गौरव को बढ़ाता है।

■ लाला भगवानदीन 'दीन'

दीवान प्रतिपाल सिंह लिखित बुन्देलखण्ड का इतिहास सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। दुर्भाग्य से अस्सी वर्ष बीतने के बाद भी इसका अब तक प्रथम भाग ही प्रकाशित है। शेष अप्रकाशित हैं। सुखद यह है कि इतने वर्ष बीतने के बाद भी उनके सुपुत्र कुँवर श्री पृथ्वी सिंह उन सभी भागों को सुरक्षित रखे हुए हैं .... जिस दिन सभी खंड प्रकाशित हो जाएंगे यह साहित्य और इतिहास जगत में ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

■ डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंयाँ

Scanned with OKEN Scanner

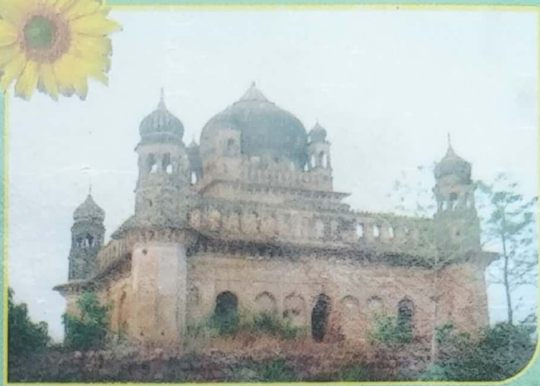
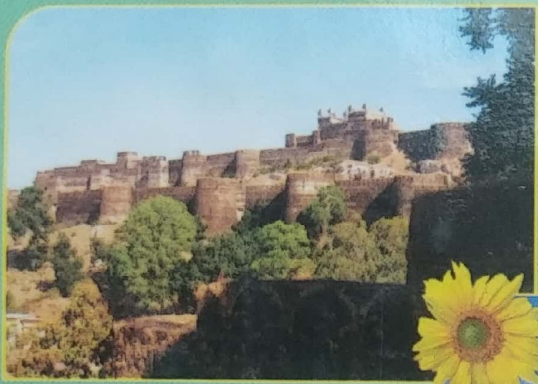

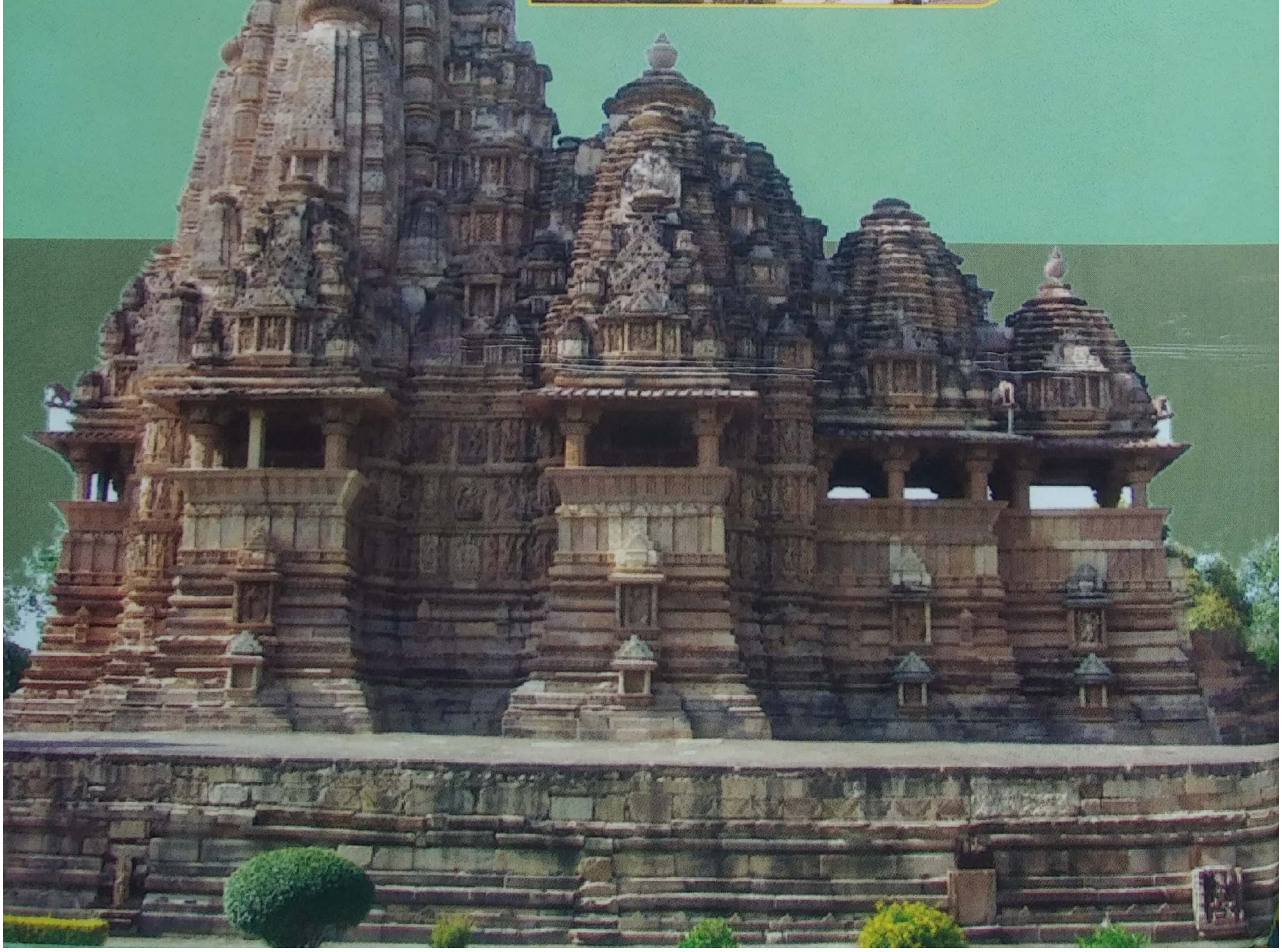
Scanned with OKEN Scanner